بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob,+.91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **5.2.2016** बैतुल फ़तूह लंदन।

अहमदी होकर हम पर बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ पड़ रही हैं जिन्हें हमें अपने सामने रखना चाहिए। सच्चा अहमदी तो वही है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुपम सुन्दर आचरण के अनुसार चलने का प्रयास करे तथा ख़ुदा तआला का बनने का प्रयत्न करे। यदि कोई यह चाहे कि दिखावे एंव धोके से ख़ुदा तआला को ठग लूँगा तो यह मूर्खता और नादानी है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक जलसे पर एक साहब ने अपने भाषण में कहा कि हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के सिलसिले और दूसरे मुसलमानों में केवल यह अन्तर है कि वे मसीह इब्ने मरयम का जीवित आसमान पर जाना मानते हैं तथा हम विश्वास रखते हैं कि उनका निधन हो चुका है। इसके अतिरिक्त कोई ऐसी बात नहीं जो हमारे तथा उनके बीच मतभेद हो। क्यूंकि इस बात से अनेक बातें तथा आपके अवतरण का उद्देश्य स्पष्ट नहीं होता था इस लिए आपने 27 दिसम्बर 1905 को स्वयं इस बात के स्पष्टीकरण के लिए एक तक़रीर फ़रमाई। जिसमें आपने फ़रमाया कि मेरी नियुक्ति का उद्देश्य केवल इतने से अन्तर को बतलाना नहीं है। इतनी सी बात के लिए, इतने छोटे काम के लिए अल्लाह तआला को सिलसिला स्थापित करने की आवश्यकता नहीं थी अपितु मुसलमानों के कर्मों की हालत भी बिगड़ चुकी थी जो मुसलमानों के पतन का कारण बन रही हैं तथा जिनके सुधार हेतु अल्लाह तआला ने आपको भेजा है। उनमें से एक झूठ से बचना तथा सत्य की स्थापना है, और आपने जमाअत को नसीहत की, इस बारे में कि अपने सच्चाई के स्तरों को बुलन्द करो तथा अपने और ग़ैर में इस अन्तर को प्रकट करो। केवल ईमान ले आना तथा आपकी नियुक्ति को सच्चा मान लेना कुछ काम नहीं आता। अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में भी वास्तविक मोमिनों की यही निशानी बतलाई है कि لا یشھدون الزور अर्थात वे झूठी गवाही नहीं देते। फिर शिर्क तथा झूठ के विषय में बताया कि इनसे बचो, इकट्ठा किया शिर्क और झूठ को। अर्थात झूठ का गुनाह भी शिर्क की भांति है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में जो शब्द प्रयोग किया है, वह जैसा कि मैंने पढ़ा ''ज़ूर'' का शब्द प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है झूठ, अनर्थ, झूठी गवाही, ख़ुदा तआला के साथ किसी को उसका साझी मानना, ऐसी गोष्ठियाँ अथवा स्थान जहाँ सामान्यतः झूठ बोला जाता हो। इसी प्रकार गाने बजाने तथा व्यर्थ बातें तथा झूठ, ये सारे ''ज़ूर'' के अर्थ हैं। अतः मोमिन वे हैं, ख़ुदा तआला के बन्दे वे हैं जो झूठ नहीं बोलते, जो ऐसे स्थानों पर नहीं जाते जहां व्यर्थ की बातें तथा झूठ बोलने वालों की मज्लिस जमी हो। वे अल्लाह तआला के साथ किसी को साझी नहीं बनाते, न ही ऐसे स्थानों पर जाते हैं जहाँ शिर्क वाले काम हो रहे हों और फिर कभी झूठी गवाहियाँ नहीं देते। अतः यदि हममें से प्रत्येक इस प्रकार झूठ से बचे तो एक ऐसा बदलाव वह अपने भीतर उत्पन्न कर सकता है जो वास्तविक मोमिन बनाता है। इस प्रकार अब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सम्बोधन का वह अंश पेश करता हूँ जो झूठ के विषय में आपने फ़रमाया उसमें। इसको ध्यान पूर्वक सुनें। आज हममें से भी अनेक अथवा बहुसंख्या तो ऐसी है जिसको इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

मुसलमानों में भीतरी मतभेतद का कारण यही संसार से प्रेम है क्यूंकि यदि केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता सम्मुख होती तो सरलता से समझ में आ सकता था कि अमुक सम्प्रदाय के सिद्धांत अधिक स्पष्ट हैं और वे उन्हें स्वीकार करके एक हो जाते। फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया था कि قل ان کنتم تحبون اللہ فاتبعونی یحببکم اللہ अर्थात यदि तुम अल्लाह तआला से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तआला तुमको दोस्त रक्खेगा। फ़रमाया कि आपके पद्चिन्हों पर चलो फिर

देखो कि ख़ुदा तआला कैसे कैसे फ़ज़्ल करता है। सहाबा ने वह मार्ग ग्रहण किया था फिर देख लो कि अल्लाह तआला ने उन्हें कहाँ से कहाँ पहुंचाया। उन्होंने दुनया पर लात मार दी थी तथा संसार के मोह से मुक्त हो गए थे। अपनी अभिलाषाओं पर एक प्रकार की मौत ओढ़ ली थी। अब तुम अपनी अवस्था की उनसे तुलना करके देख लो, क्या उन्हीं के पद्चिन्हों पर हो? खेद है कि लोग नहीं समझते कि ख़ुदा तआला उनसे क्या चाहता है?

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. ने हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद के हवाले से एक घटना बयान की, वे मजिस्ट्रेट थे। कहते हैं, एक बार मेरे पास एक व्यक्ति आया जिसको मैं जानता था। तारीख़ थी, गवाहों की पेशी होनी थी। उसने कहा मुझे अगली तारीख़ दे दें मेरे गवाह उपस्थित नहीं हुए, तो हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब ने उसे मज़ाक़ में कहा कि मैं तो तुम्हें बड़ा बुद्धिमान व्यक्ति समझता था, तुम तो निरे मूर्ख निकले। गवाह कहाँ से तुमने लाने हैं, बाहर जाओ किसी को आठ आने, रुपया दे दो, तुम्हारे गवाह बन कर आ जाएँगे। इस प्रकार वह व्यक्ति बाहर चला गया और थोड़ी देर बाद दो तीन आदमी ले आया गवाह, और गवाह से जब जिरह करते थे हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब, तो वह बड़ी गम्भीरता से उत्तर देता कि हाँ मैंने देखा है, इस प्रकार घटना हुई है, उस प्रकार घटना हुई है। हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब कहते हैं कि मैं मन ही मन हंस रहा था, बल्कि उसके सामने ही हंस रहा था कि मेरे कहने पर बाहर गया, गवाह लेकर आया तथा गवाह कितनी सफ़ाई से मेरे सामने झूठ बोल रहे हैं और ख़ुदा की क़सम खाकर, क़ुरआन हाथ में पकड़ कर झूठ बोल रहे हैं। तो इसके पश्चात जब गवाही दे दी उन्होंने, मैंने उन्हें कहा, तुम्हें लाज नहीं आती कि क़ुरआन हाथ में पकड़ कर, क़ुरआन के ऊपर गवाही दे रहे हो और मेरे सामने ही लेकर आए हो। तो यह गवाहों का हाल है और आज भी यही हाल है। हमें तो जमाअत के विरुद्ध मुक़दमों में अनेक बार नज़र आता है कि असंख्य लोग जो साक्षी भी नहीं होते वे पेश हो जाते हैं गवाह बनकर किसी के मुक़दमे में। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी फ़रमाते हैं कि आज दुनया की स्थिति बड़ी दयनीय हो गई है जिस दृष्टि और रंग से देखो झूठे गवाह बनाए जाते हैं। झूठे मुक़दमे करना तो बात ही कुछ नहीं, झूठे प्रमाण पत्र बना लिए जाते हैं। अल्लाह तआला ने तो झूठ को गन्दगी कहा था कि इससे परहेज़ करो। فاجتنبوا الرجس من الاوثان واجتنبوا قول الزور बुतों को पूजने के साथ इस झूठ को मिलाया है। फ़रमाया, जैसे मूर्ख व्यक्ति अल्लाह तआला को छोड़कर पत्थर के सामने सिर झुकाता है वैसे ही सत्य एंव वास्तविकता को छोड़ कर अपने स्वार्थ के लिए झूठ को बुत बनाता है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने उसको बुतों के पूजने के साथ मिलाया है तथा उससे सम्बंधित किया है। जैसे एक बुतों का पुजारी बुत के द्वारा मुक्ति प्राप्ति चाहता है। झूठ बोलने वाला भी अपनी ओर से बुत बनाता है तथा समझता है कि बुत के द्वारा मुक्ति मिल जाएगी। कैसी विघ्नता आ पड़ी है यदि कहा जाए कि क्यूँ बुतों को पूजते हो, इस गन्दगी को छोड़ दो तो कहते हैं कि किस प्रकार छोड़ दें, इसके बिना काम नहीं हो सकता। इससे बढ़कर और क्या दुर्भाग्य होगा कि झूठ पर निर्भर हैं परन्तु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अन्ततः सत्य ही सफल होता है, भलाई और विजय उसी की है।

फिर अपना एक वृत्तांत बयान फ़रमाते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम। फ़रमाया कि इस विनीत ने इस्लाम के समर्थन में आर्यों के विरुद्ध एक ईसाई के छापे ख़ाने में एक निबन्ध छपवाने के लिए एक पैकिट के रूप में, जिसके दोनों छोर खुले हुए थे, भेजा। फ़रमाया कि, और उस पैकिट में एक पत्र भी रख दिया। क्यूँकि पत्र में इस प्रकार के शब्द थे जिनके द्वारा इस्लाम का समर्थन तथा अन्य धर्मों के झूठ की ओर संकेत था और निबन्ध को छापने के लिए आग्रह भी किया था इस लिए वह ईसाई, धर्म विरोध के कारण क्रोधित हुआ और दुर्भाग्य वश उसको शत्रुता के रूप में आक्रमण करने का अवसर मिला कि किसी पृथक पत्र का पैकिट में रखना नियमानुसार एक अपराध था। जिसका इस विनीत को कुछ भी ज्ञान न था तथा ऐसे अपराध की सज़ा में डाक के क़ानून के अनुसार पाँच सौ रुपए जुर्माना अथवा छः महीने तक क़ैद है। तो उसने ख़बरी बनकर डाक के अधिकारियों के द्वारा इस विनीत पर मुक़दमा दायर करा दिया।

इस प्रकार मैं इस अपराध के कारण सदर ज़िला गुरदासपुर में बुलाया गया और जिन जिन वकीलों से मुक़दमें के सम्बंध में विचार विमर्श किया गया उन्होंने यही सुझाव दिया कि झूठ बोलने के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं और यह सलाह दी कि इस प्रकार ज़ाहिर करो कि हमने पैकिट में पत्र नहीं डाला, रलिया राम ने स्वयं ही डाल दिया होगा तथा सांतवना देने के लिए कहा कि इस प्रकार बयान करने से शहादत पर निर्णय हो जाएगा और दो चार झूठे गवाह देकर बरी हो जाओगे। (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को वकील सलाह दे रहे हैं कि झूठे गवाह पेश करो) अन्यथा (वकीलों ने कहा कि) मुक़दमा होने की अवस्था में बड़ी कठिनाई होगी तथा कोई स्थिति रिहाई की नहीं है (परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं) मैंने उन सबको उत्तर दिया कि मैं किसी हालत में सत्य को नहीं छोड़ना चाहता, जो होगा सो होगा। तब उसी दिन अथवा दूसरे दिन मुझे एक अंग्रेज़ की अदालत में पेश किया गया और मेरे विरुद्ध डाक ख़ाने का अफ़सर सरकरी अभियोगी होने के रूप में उपस्थित हुआ। उस समय अदालत के अधिकारी ने अपने हाथ से मेरा बयान लिखा और सबसे पहले मुझसे यही प्रश्न किया कि क्या यह पत्र

तुमने अपने पैकिट में रख दिया था और यह पैकिट तुम्हारा है? तब मैंने तुरन्त उत्तर दिया कि यह मेरा ही पत्र है तथा मेरा ही पैकिट है और मैंने इस पत्र को पैकिट के भीतर रखकर भेजा था परन्तु मैंने सरकारी फ़ीस की हानि जान बूझकर करने की नीयत से यह काम नहीं किया। इस प्रकार जब वह वादी अफ़सर अपने समस्त प्रमाण दे चुका और अपना पूरा क्रोध निकाल चुका तो अदालत ने निर्णय लिखने की ओर ध्यान दिया और सम्भवतः एक या डेढ़ वाक्य लिखकर मुझको कहा कि अच्छा आपके लिए माफ़ी है। यह सुनकर मैं अदालत के कमरे से बाहर निकला तथा अपने वास्तविक उपकारी के प्रति आभार प्रकट किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं किस प्रकार कहूँ कि झूठ के बिना काम नहीं चलता, ऐसी बातें बड़ी अनर्थ हैं। सच तो यह है कि सत्य के बिना कोई मार्ग नहीं **من یتوکل علی اللہ فھو حسبہ** जो अल्लाह तआला पर पूर्ण भरोसा करता है, अल्लाह उसके लिए काफ़ी हो जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यक़ीनन याद रक्खो झूठ जैसी कोई अकल्याण कारी चीज़ नहीं। समान्यतः सांसारिक लोग कहते हैं कि सच बोलने वाले फंस जाते हैं परन्तु मैं कैसे इस बात को मान लूँ? मुझ पर सात मुक़दमे हुए हैं और ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से किसी एक में एक शब्द भी मुझे झूठ लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कोई बताए कि किसी एक में भी ख़ुदा तआला ने मुझे हार दी हो। अल्लाह तआला तो आप सत्य का पक्षधारी और सहायक है, यह हो सकता है कि वह सत्य मार्गी को दंड दे?

फिर आप फ़रमाते हैं कि वास्तविकता यह है कि सच बोलने से जो दंड भोगते हैं वह सच के कारण नहीं होता, वह दंड उनको कुछ अन्य गुप्त कुकर्मों के कारण मिलता है तथा किसी अन्य झूठ की सज़ा होती है। ख़ुदा तआला के पास तो उनके दुष्कर्मों एंव बुराईयों का एक क्रम होता है, उनके अनेक दोष होते हैं तथा किसी न किसी में वे दंड भोगते हैं।

फ़रमाया- जो व्यक्ति सत्य धारण करेगा कभी नहीं हो सकता कि अपमानित हो इस लिए कि वह ख़ुदा तआला की सुरक्षा में होता है तथा ख़ुदा तआला की रक्षा जैसा कोई सुरक्षित दुर्ग तथा घेरा नहीं है। परन्तु अधूरी बात लाभप्रद नहीं हो सकती। क्या कोई कह सकता है कि जब प्यास लगी हो तो केवल एक बून्द पी लेना पर्याप्त होगा अथवा अधिक भूख के समय एक दाना या निवाले से संतुष्ट हो जाएगा। कदापि नहीं, अपितु जब तक पूरा पेट भर पानी न पिए अथवा खाना न खाए, संतुष्टि नहीं होगी। इसी प्रकार जब तक कर्मों में सम्पूर्णता न हो वे फल एंव परिणाम पैदा नहीं होते जो होने चाहिएं। अधूरे कर्म ख़ुदा तआला को प्रसन्न नहीं कर सकते और न ही वे बरकत वाले हो सकते हैं। अल्लाह तआला का यही वादा है कि मेरी इच्छानुसार कर्म करो फिर मैं बरकत दूंगा। यदि निष्ठा हो तो अल्लाह तआला तो तनिक भी किसी नेकी को निष्फल नहीं छोड़ता। उसने तो स्वयं फ़रमाया है **من یعمل مثقال ذرۃ خیرا یرہ** अर्थात जिसने ज़रा भी नेकी की होगी वह उसका परिणाम देखेगा और फल पाएगा। फ़रमाया- इस लिए यदि तनिक भी नेकी हो तो अल्लाह तआला से उसका प्रतिफल पाएगा। इन सब बातों को सम्मुख रखते हुए प्रत्येक अहमदी आत्मनिरीक्षण करे। उदाहरणतः कुछ बातें ऐसी हैं जो बयान करता हूँ। मुक़दमों में यह विश्लेषण करें कि हम मुक़दमों में झूठ से तो काम नहीं लेते? फिर हम कारोबारों में लाभ के लिए झूठ से तो काम नहीं लेते। फिर हम रिश्ते जोड़ते समय झूठ तो नहीं बोलते। क्या हर प्रकार से क़ौल-ए-सदीद (सत्य एंव स्पष्ट बात) से काम लेते हैं? लड़के और लड़की के विषय में पूरी जानकारी दी जाती है? सरकार से सामाजिक एंव वैल्फ़ैयर एलाउंस लेने के लिए झूठ का सहारा तो नहीं लेते? इस विषय में तो बहुत से लोगों के बारे में नकारात्मक व्यवहार पाया जाता है कि अपनी आय छिपाकर सरकार से एलाऊंस लिया जाता है तथा इसी कारण से टैक्स की अदायगी भी नहीं की जाती, यहाँ टैक्स भी चोरी होता है। हमें याद रखना चाहिए कि अब जो सामान्य आर्थिक परस्थितियाँ दुनया की हैं प्रत्येक सरकार समस्याओं में घिरी हुई है और यदि नहीं, तो हो जाएगी। इस लिए अब सरकारें गहराई में जाकर वास्तविकता जानने का प्रयास करती हैं और कर रही हैं। अतः यदि सरकार के सामने कोई अनुचित बात आ जाती है तो जहाँ वे उस व्यक्ति के लिए कठिनाईयाँ उत्पन्न करेगी वहाँ अहमदियत की बदनामी का कारण भी बनेगी, यदि यह पता हो कि यह व्यक्ति अहमदी है। अतः जो इस दृष्टि से किसी असत्य से काम ले रहे हैं वे दुनया के स्वार्थ को न देखें, थोड़े से में गुज़ारा करके झूठ से बचकर अल्लाह तआला को प्रसन्न करने का प्रयास करें। पदाधिकारी भी अपना निरीक्षण करें कि क्या वे अपनी रिपोर्टों में असत्य तो नहीं लिखते अथवा कोई ऐसी बात तो नहीं छोड़ देते जिसका महत्त्व हो। कई बार यदि झूठ न बोला जाए, पहले भी मैंने कहा था एक बार एक ख़ुत्बः में, लेकिन सम्पूर्ण रूप से यदि क़ौल-ए-सदीद से काम न लिया जाए तो वह भी ग़लत है। तक़्वा से काम लेते हुए मामले निपटाए जाने चाहिएँ। अतः बहुत गहराई में जाकर मामलों को देखने की आवश्यकता होती है। प्रत्येक अपने स्वार्थ से बाहर निकल कर, अपने अहंकारों से बाहर निकल कर, ख़ुदा तआला के भय को सम्मुख रखते हुए अपने मामले निपटाए और इस प्रकार अपने मामले निपटाने चाहिएँ। यदि यह सब कुछ नहीं तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यह सब कुछ संसार के मोह की अभिव्यक्ति है और संसार का मोह जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है, मतभेद की ओर ले जाता है, और मतभेद से फिर ज़ाहिर है जमाअत की इकाई भी स्थापित नहीं रहती अथवा कम से कम उस

समाज में, उस क्षेत्र में एक उपद्रव पैदा हो जाता है और वह एकता जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पैदा करने आए थे वह समाप्त हो जाती है। संसार के मोह के कारण ही अन्य सम्प्रदाय बने थे, इसी प्रकार का फिर एक सम्प्रदाय बन जाएगा। इस प्रकार एक बुराई के द्वारा कई बुराईयाँ जन्म लेती हैं। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है बुराईयाँ फिर बच्चे देती चली जाती हैं।

अतः अहमदी होकर बड़े दायित्व पड़ रहे हैं जिन्हें हमें अपने सामने रखना चाहिए। सच्चा अहमदी तो वही है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुपम सुन्दर आचरण के अनुसार चलने का प्रयास करे तथा ख़ुदा तआला का बनने का प्रयत्न करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं एक स्थान पर इसी क्रम में जो पीछे मैंने बयान किया है।

कि ख़ूब याद रक्खो कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के लिए हो जावे ख़ुदा तआला उसका हो जाता है और ख़ुदा तआला किसी धोखे में नहीं आता। यदि कोई यह चाहे कि दिखावे और धोखे से ख़ुदा तआला को ठग लूँगा तो यह मूर्खता एंव नादानी है। वह स्वयं ही धोखा खा रहा है। संसार की शोभा, संसार का मोह सारी बुराईयों की जड़ है इस लिए ख़ुदा तआला की महानता को दिल में रखना चाहिए और उससे सदैव डरना चाहिए। उसकी पकड़ भयानक होती है। वह अनदेखा करता है तथा क्षमा करता है परन्तु जब किसी को पकड़ता है तो फिर बड़ी दृढ़ता से पकड़ता है यहाँ तक कि لا یخاف عقبہا फिर वह इस बात की भी चिंता नहीं करता कि उसके पिछलों का क्या हाल होगा। इसके विरुद्ध जो लोग अल्लाह से डरते हैं तथा उसकी महानता को मन में बसाते हैं। ख़ुदा तआला उनको सम्मान देता है तथा स्वयं उनके लिए एक ढाल बन जाता है। हदीस में आया है من کان للہ کان اللہ لہ अर्थात जो व्यक्ति अल्लाह तआला के लिए हो जावे अल्लाह तआला उसका हो जाता है। फ़रमाया- ख़ूब याद रक्खो कि प्रत्येक उन्नति क्रमानुसार होती है और ख़ुदा तआला केवल इतनी सी बातों से प्रसन्न नहीं हो सकता कि हम कह दें हम मुसलमान हैं या मोमिन हैं। अतः उसने फ़रमाया है कि احسب الناس ان یترکوا ان یقولوا امنا وھم لا یفتنون अर्थात क्या ये लोग धारणा बना बैठे हैं कि अल्लाह तआला इतना ही कहने पर प्रसन्न हो जावे और ये लोग छोड़ दिए जावें कि वे कह दें कि हम ईमान लाए और इनकी कोई परीक्षा न हो।

इस्लाम ने यह शिक्षा दी है कि قد افلح من زکھا अर्थात मुक्ति पा गया वह व्यक्ति जिसने आत्म-शुद्धि की। अर्थात जिसने हर प्रकार के अधर्म और घोर पाप तथा तुच्छ मनोवृत्तियों से अपने आपको ख़ुदा तआला के लिए अलग कर लिया और हर प्रकार की हीन भावनाओं को छोड़ कर ख़ुदा तआला की राह में कठिनाइयाँ सहने को प्राथ्मिकता दी। ऐसा व्यक्ति वास्तव में मुक्ति प्राप्त है जो ख़ुदा तआला को प्राथ्मिकता देता है तथा दुनया और उसके दिखावे को छोड़ता है।

अल्लाह तआला करे कि हम अपने कर्मों में बदलाव पैदा करने वाले हों। सत्य के स्तर को समझने वाले हों। दीन को दुनया पर प्राथ्मिकता देने वाले हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर केवल अपने मन से नहीं बल्कि वास्तव में आपके आगमन के उद्देश्य को समझने वाले हों तथा उसे पूरा करने वाले हों। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण का अनुसरण करने का भरसक प्रयास करने वाले हों और अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्रत्येक वस्तु पर प्राथ्मिकता देकर उसे प्राप्त करने का प्रयास करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम क़ासिम तोरे साहब मुबल्लिग़-ए-सिलसिला के निधन की सूचना देते हुए उनके सद्कर्मों एंव सेवाओं का वर्णन फ़रमाया तथा जनाज़ा पढ़ने की घोषणा फ़रमाई।